समीक्षा पुस्तक : शब्दों का सफ़र (कुण्डलिया-संग्रह)

समीक्षा लेखक - अशोक रक्ताले 'फणीन्द्र'

दोहा, कुण्डलिया और चौपाई ये कुछ ऐसे छंद हैं, जो पाठ्य-पुस्तक के माध्यम से, धार्मिक ग्रंथों के माध्यम से या बोलचाल में प्रयुक्त होने के कारण ही सही, ये छंद सामान्य जन के मुख पर हैं और बहुत लोकप्रिय हैं।

कुण्डलिया के नाम से जो नाम सर्वप्रथम ध्यान हो आता है वह है कवि श्रेष्ठ गिरधर का। इनसे पूर्व भी कई श्रेष्ठ कवियों ने कुण्डलिया छंद लिखे हैं, किन्तु वे उतनी प्रसिद्धि नहीं पा सके हैं जो कवि गिरधर को प्राप्त है। आज कितने कवि कुण्डलिया लिख रहे हैं कहना सम्भव नहीं है किन्तु देश की प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका 'सरस्वती सुमन' के अगस्त-सितम्बर 2025 के अंक को आधार माना जाए तो एक सौ चौंतीस(134) ज्ञात कुण्डलियाकार हैं। इस बात की पूर्ण संभावना है कि सम्पादक की पूर्ण कोशिशों के बावज़ूद कई कुण्डलियाकार छूट गये होंगे।

कुण्डलिया छंदों में एक विशेष नाम जो उभर कर आ रहा है वह है डॉ.बिपिन पाण्डेय जी का। इनके द्वारा इसी वर्ष अर्थात् वर्ष 2025 में ही 'कुण्डलिया छंद एक विवेचन' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई, जिसकी साहित्य जगत में बहुत प्रशंसा हुई। इस कारण साहित्य जगत उनके नवीन कुण्डलिया संग्रह की बहुत आतुरता से प्रतीक्षा कर रहा था। वह कुण्डलिया-संग्रह 'सफ़र शब्दों का' भी अब आ चुका है। डॉ. बिपिन पाण्डे जी द्वारा मुझे कुछ दिनों पूर्व यह संग्रह उपलब्ध कराया है।

डॉ. बिपिन पाण्डेय कृत कुण्डलिया-संग्रह 'सफ़र शब्दों का' अन्य कुण्डलिया संग्रहों से इस माने में भिन्न है कि इसमें संग्रहीत कुण्डलिया छंद हिंदी मुहावरों को आधार बनाकर रचे हैं और यह कुछ छंदों में सायास हो सकता है तो कुछ में अनायास भी। इस संग्रह के कुण्डलिया छंदों में एक मुहावरे का प्रयोग तो है ही कहीं एकाधिक मुहावरों का प्रयोग भी देखने मिलता है। यह दौर सच कहा जाए तो छंदों में प्रयोगों का ही दौर है। कुछ प्रयोग ऐसे हैं जो चिंतित करते हैं तो कुछ हर्ष से भर देते हैं। डॉ. बिपिन पाण्डेय का संग्रह 'सफ़र शब्दों का' में किया गया प्रयोग उत्साहित करता है।

ग्रन्थ में समाहित 180 छंदों में कहीं ऐसा प्रतीत नहीं होता कि मुहावरे को छंद में स्थान देने के लिए कोई विशेष रूप से जगह बनाई गई है। मुहावरों का प्रयोग कहीं छंद की लय, गति आदि में बाधक नहीं बना है। एक बानगी देखें –

जीवन में जब भी कभी, होतीं आँखें चार।
परिवर्तित होने लगे, अनायास व्यवहार।।
अनायास व्यवहार, दिखे करता मनमानी।
करते खूब सिंगार, समझते राजा रानी।
होता है उत्साह, तरसता मिलने को मन।
मिल जाता जब प्रेम, सुहाना लगता जीवन।।

उक्त छंद में 'आँखें चार होना' मुहावरे का बहुत ही सहजता से प्रयोग हुआ है। कितना सौभाग्य होता है किसी के लिए जीवन में प्रेम पा जाना, यही प्रेम व्यक्ति को जीवन के प्रति आसक्त बना देता है।'सफ़र शब्दों का' की भूमिका कुण्डलिया के प्रसिद्ध हस्ताक्षर श्री त्रिलोकसिंह ठकुरेला जी ने लिखी है, जिनका ध्येय रहा है कुण्डलिया छंद के प्रति कवियों को आकर्षित करना और अधिकाधिक कवियों से कुण्डलिया छंद सृजन करवाना। उन्होंने भी डॉ. बिपिन पाण्डेय के इस प्रयास एवं प्रयोगधर्मिता की प्रशंसा करते हुए कहा है कि "डॉ. बिपिन पाण्डेय ने मुहावरे एवं लोकिक्तियों का प्रयोग करते हुए कुण्डलिया छंदों को और अधिक पठनीय व शोभनीय बनाने का अद्वितीय प्रयास किया है।"

श्री ठकुरेला जी के कथन से मेरी भी सहमति है। यह एक श्रमसाध्य कार्य है और इसमें छन्दानुशासन के साथ ही कुशलता से इसे साध सकने की रूचि, सामर्थ्य और कौशल होना आवश्यक है। इसे निश्चित ही एक निपुण कुण्डलियाकार अंजाम दे सकता है। देखें कि डॉ. बिपिन पाण्डेय ने 'कान का कच्चा होना' मुहावरे कितना सुन्दर प्रयोग किया है कुण्डलिया में –

कच्चे हैं जो कान के, रहना उनसे दूर।
उन्हें सूचना स्रोत पर, होता बहुत गरूर॥
होता बहुत गरूर, बने रहते वे शक्की।
करते परख न जाँच, ख़बर कितनी है पक्की।
सच लेते हैं मान, घूमते बनकर बच्चे।
कभी न पाते मान, कान के मानव कच्चे॥

डॉ. बिपिन पाण्डेय जी की छंद रचनाओं को वैसे तो लम्बे समय से पढ़ रहा हूँ किन्तु उनका छंदकार के रूप में सही परिचय मुझे वर्ष 2019 में प्रकाशित उनके दोहा-संग्रह 'स्वांतः सुखाय' से हुआ है। किन्तु 'कुण्डलिया छंद एक विवेचन' के माध्यम से उनका जो रूप सामने आया वह अद्भुत था। इस पुस्तक में उन्होंने देश के कई कुण्डलियाकारों की सैकड़ों रचनाओं पर समीक्षात्मक प्रतिक्रिया दी है। ऐसा कार्य मेरी जानकारी अनुसार कुण्डलिया छंद ही नहीं वरन किसी भी छंद पर अब तक नहीं हुआ है और आगे भी इसकी संभावना क्षीण ही नज़र आती है।

काव्य लेखन पठन की जैसे-जैसे सुविधाएं बढ़तीं गयीं, एक विकृति देखने मिली है, कई छद्म साहित्यकार कवि किसी भी श्रेष्ठ रचनाकार की कविताएँ अपने नाम से प्रकाशित करने लगे हैं। अमूमन सभी साहित्यकार इस पर चिंतित हैं। डॉ. बिपिन पाण्डेय भी इस पर कुण्डलिया के माध्यम से चिंता प्रकट करते हैं –

चोरी कर साहित्य की, जो बनते दिनमान।
होता है उनका सदा, करुणामय अवसान॥
करुणामय अवसान, ज़िन्दगी दुख में बीते।
किन्तु न आती शर्म, घड़े चिकने बन जीते।
करते चढ़कर मंच, चुटकुलेबाज़ी कोरी।
पढ़ें गीत या छंद, हमेशा करके चोरी॥

डॉ. बिपिन पाण्डेय कृत 'शब्दों का सफ़र' कुण्डलिया-संग्रह समस्त छंद काव्य प्रेमियों के लिए एक पठनीय ग्रन्थ है। मुहावरों को समाहित कर कुण्डलिया लिखने का उनका यह प्रयोग अवश्य ही काव्य-जगत के लिए और भी नये प्रयोगों का मार्ग प्रशस्त करेगा। पुस्तक के जो पाठक यदि किसी मुहावरे से परिचित नहीं होंगे, उनके लिए पुस्तक के अंत में एक तालिका बनाकर मुहावरे का अर्थ सहित उल्लेख किया गया है।

डॉ. बिपिन पाण्डेय को

मुहावरों पर कुण्डलिया रचने के महती कार्य के लिए, कुण्डलिया-संग्रह 'शब्दों का सफ़र' प्रकाशित होने के लिए पूरे मन से बधाई एवं इसकी काव्य जगत में इसकी उपयोगिता एवं सफलता के लिए शुभकामनाएं।

पुस्तक : शब्दों का सफ़र
पृष्ठ संख्या : 88
मूल्य : रु. 299/ - मात्र
प्रकाशक : श्वेतवर्णा, नोएडा (उ.प्र.)